© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 684-692

विकासखंड मऊआइमा (इलाहाबाद) का जनसांख्यिकीय अध्ययन

विकास कुमार
शोध छात्र, भूगोल विभाग,
नेहरू ग्राम भारती डीम्ड विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

शोध आलेख सार – भूगोल के अध्ययन में मानव का विशिष्ट स्थान है। भौगोलिक तत्व, संसाधन तथा कारक तीनों है।वस्तुतः मानव भौगोलिक वातावरण का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है भौगोलिक तत्वों को तीन प्रमुख वर्गों में बांटा जा सकता है। (1) मानव प्रकृति संसाधनों का विकास और उपयोग दोनों करता है तथा मानवीय वातावरण का निर्माण करता है। (2) प्राकृतिक पर्यावरण जिसमें मनुष्य कार्यरत रहता है तथा जिसमें संसाधनों का उपयोग करता है, (3) मानवीय पर्यावरण जो मनुष्य के द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण तथा संसाधनों के उपयोग का प्रतिफल है। इस प्रकार भौतिक तत्वों के साथ मानव भूगोल के केंद्र बिंदु में होता है। मानव की संख्या, संस्कृति एवं अन्य विशेषताएं सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है। बिना मनुष्य के पृथ्वी संसाधन विहीन है क्योंकि मनुष्य की आवश्यकताओं के संदर्भ में ही कोई तत्व संसाधन बनते हैं। मानव ही संसाधन का उपयोग एवं परिवर्तन करता है। मनुष्य उत्पादक दिन में करता तथा उपभोक्ता भी है अतः सबसे महत्वपूर्ण कारक और संसाधन दोनों हैं। इस प्रकार विकासखंड मऊआइमा की जनसंख्या एवं उसकी विशेषताओं का अध्ययन आवश्यक है।
शब्द बिंदु: जनसांख्यिकीय, वृद्धि , साक्षरता, विकासखंड।

जनसंख्या विशेषताएं

परिचय: प्रकृति द्वारा उपहार स्वरूप प्राप्त होने वाले भौतिक कारकों, जैसे–संरचना, उच्चावच, अपवाह, जलवायु, मिट्टी, वनस्पति आदि का किसी क्षेत्र विशेष के विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके साथ सांस्कृतिक कारकों, जैसे–जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या वितरण, घनत्व, साक्षरता, यातायात एवं संचार तथा व्यावसायिक संरचना भी उस क्षेत्र के विकास को प्रभावित करते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि भौगोलिक विशिष्टताएं क्षेत्र विशेष में सामाजिक–सांस्कृतिक हेतु आधार प्रस्तुत करती हैं। इसलिए शोध अध्ययन के मूल विषय का अध्ययन करने से पहले उस क्षेत्र विशेष की भौगोलिक विशिष्टताओं का अध्ययन करना अत्यन्त ही आवश्यक हो जाता है।

2.1 जनसंख्या वृद्धि

राष्ट्रीय स्तर पर जनसंख्या वृद्धि औसतन 1.76 प्रतिशत जनगणना 2011 के अनुपात में बढ़ रही है। यद्यपि देश की जनगणना 1871 मे प्रथम बार शुरू की गई तब भारत की कुल जनसंख्या 20.3 करोड़ थी। तब से लेकर 1901 तक जनसंख्या वृद्धि काफी मंद रही है 20 वीं सदी में जनसंख्या वृद्धि को चार चरणों में बांटा जा सकता है।

(1.) मंद वृद्धि (1901–1921)– इस दौरान जनसंख्या 27 प्रति हजार के औसत से बढ़ी और भारत की कुल जनसंख्या 25 करोड़ हो गई। इस दौरान 1911–21 के मध्य महामारी और सूखा का प्रकोप अधिक होने के कारण जनसंख्या में बेहद मंद वृद्धि हुई।

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 684-692

(2.) स्थिर वृद्धि (1921–51)– 1921 को जनसांख्यिकीय विभाजक वर्ष के रूप में जाना जाता है। इसके बाद जनसंख्या में वृद्धि की निरंतर प्रवृत्ति देखने को मिली इस दौरान जनसंख्या 36 करोड़ तक पहुंच गई वृद्धि का कारण स्वास्थ्य सुविधाओं में विस्तार जिससे मृत्यु दर में गिरावट और जन्म दर स्थिर रही।

(3.) तीव्र वृद्धि (1951–1981)– 1951 को दूसरा जनसांख्यिकीय विभाजक वर्ष कहा जाता है। 1951 से जनसंख्या में तीव्र वृद्धि देखी गई औसत वृद्धि दर 2.2 प्रतिशत प्रतिवर्ष दर्ज की गई। इसका मुख्य कारण स्वास्थ्य सुविधाओं विस्तार शिक्षा में सुधार आदि प्रमुख कारण है।

(4.) घटती वृद्धि (1981 से वर्तमान)– यद्यपि 1981 के बाद भारत की जनसंख्या में वृद्धि मे क्रमिक रूप से कमी देखी गई जो 2001 में 1.9 प्रतिशत वृद्धि दर रही वहीं 2011 में 1.76 प्रतिशत हो गई। इसका मुख्य कारण शिक्षा एवं स्वास्थ्य में विस्तार एवं परिवार नियोजन के प्रति लोगों में जागरूकता का विस्तार है।

2.1.1 विकासखंड मऊआइमा में जनसंख्या वृद्धि

विकासखंड मऊआइमा प्रयागराज जिले का एक भाग है। जिसका विस्तार गंगापार के मैदानी भूभाग में है। जो सोरांव तहसील के अंतर्गत स्थित है। उपजाऊ मिट्टी कृषि के लिए अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न करती हैं। जो अधिकाधिक मानव निवास के लिए आवश्यक दशाएं उत्पन्न करती हैं जो भारी जनसंख्या का भरण पोषण करने में सक्षम है। विकासखंड मऊआइमा में जनसंख्या वृद्धि तीव्र गति से बढ़ी है। जहां इलाहाबाद जनपद की औसत वृद्धि दर 1.29 प्रतिशत (2011 जनगणना) है। विकासखण्ड मऊआइमा में वृद्धि दर 2011 जनगणना के अनुसार 2.4 प्रतिशत वार्षिक एवं 24 प्रतिशत दशकीय वृद्धि दर दर्ज की गई। जो राष्ट्रीय स्तर से अधिक वृद्धि दर है। फिर भी विगत दशकों में गिरावट देखी गई है। (तालिका 2.1)

तालिका 2.1 दशकीय वृद्धि विकासखंड मऊआइमा इलाहाबाद(1981–2011)

क्रम संख्या	वर्ष	जिला इलाहाबाद	विकास खण्ड मऊआइमा
1.	1981–1991	1.29	3.69
2.	1991–2001	1.1	2.29
3.	2001–2011	1.2	2.24

स्त्रोत : सेन्सेश आफ इंडिया 1981 1991 2001 व 2011।

तालिका: 2.2 दशकीय वृद्धि दर न्याय पंचायत विकासखंड मऊआइमा इलाहाबाद (2011)

क्रम संख्या	न्याय पंचायत	दशकीय जनसंख्या वृद्धि (2001–2011)
1.	अब्दालपुर खास	6.51
2.	अलावलपुर	3.22
3.	बाकां जलालपुर	1.56
4.	बड़गांव	2.20
5.	विसम्भर पुर	2.08
6.	वीरसिंह उर्फ अल्लीपुर	2.04
7.	इस्माइलपुर	2.24
8.	कठेवरपुर परवेजपुर	3.22
9.	महरौड़ा	0.03
10.	मऊआइमा	2.9

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 684-692

11.	पसियापुर	2.20
12.	टी.टी. अब्दालपुर	2.45
13.	रामपुर घनसियारी	3.02
कुल	**विकासखण्ड मऊआइमा**	**2.4**

स्त्रोतः सेंसस आफ इंडिया वर्ष 2001,2011।

उपरोक्त दोनों तालिका से अस्पष्ट है की विकासखंड मऊआइमा में जनसंख्या वृद्धि राज्य एवं जिला स्तर से अधिक है। इसका प्रमुख कारण परंपरागत समाज पिछड़ी अर्थव्यवस्था कृषि अर्थव्यवस्था परिवार नियोजन का अभाव निम्न जीवन स्तर आदि है। जनसंख्या 2–4 प्रतिशत के मध्य बनी हुई है। बढ़ती हुई जनसंख्या इस क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या है। जिससे आर्थिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा है इसके लिए बेहतर रणनीति एवं परिवार नियोजन की आवश्यकता है।

2.2 जनसंख्या वितरण

किसी भी देश में जनसंख्या वितरण सामाजिक आर्थिक और भौतिक कारकों पर निर्भर करता है अनुकूल दिशाएं जनसंख्या वितरण को अधिक आकर्षित करती हैं। वहां के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग, जनसंख्या वितरण पर निर्भर करता है। मानव प्राकृतिक पर्यावरण में रहकर अपनी कुशलता से पर्यावरण को परिवर्तित करता है। मानव समस्त संसाधनों का सृजन करता एवं उपभोक्ता दोनों है। इसलिए **जिम्मरमैन ने कहा "संसाधन होते नहीं बनते हैं"** अर्थात जब मानव का संबंध स्थापित होता है तो वह वस्तु संसाधन में परिवर्तित हो जाती है। जनसंख्या वितरण को धरातल, जल, मृदा तथा सामाजिक–आर्थिक कारक प्रभावित करते हैं। प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता ने भारत में जनसंख्या वितरण को काफी प्रभावित किया है। भारत के उपजाऊ मैदानी भूभाग एवं नदी घाटियां मानव आवास एवं सघन जनसंख्या के लिए भरण–पोषण की अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न करती हैं।

विकासखंड मऊआइमा में जनसंख्या का वितरण समान रूप से पाया जाता है जहां पूर्वी भाग सघन आबादी पाई जाती है। वहीं पश्चिमी भाग में जनसंख्या वितरण थोड़ा कम पाया जाता है सड़क एवं प्रमुख बाजार के पास जनसंख्या अधिक सघन पाई जाती है। ब्लॉक मुख्यालय के चारों ओर सघन जनसंख्या मिलती है। इलाहाबाद फैजाबाद मार्ग के पास अधिक आबादी रहती है। वही नगर पंचायत मऊआइमा में सघन अधिवास पाया जाता है विकासखंड मऊआइमा में जनसंख्या वृद्धि एवं वितरण अधिक पाया जाता है। मुख्य कारण परंपरागत कृषि समाज, निम्न शिक्षा स्तर, एवं परिवार नियोजन का अभाव सघन जनसंख्या का कारण है। तालिका (2.3)

तालिका–2.3: विकासखंड मऊआइमा में जनसंख्या वितरण (2001,2011)

क्रम संख्या	न्यायपंचायत	2001	2011
1.	अब्दालपुर खास	13844	22858
2.	अलावलपुर	12915	17080
3.	बाकां जलालपुर	14688	16987
4.	बड़गांव	11475	14010
5.	विसम्भर पुर	1585	1912
6.	वीर सिंह उर्फ अल्लीपुर	1532	1845
7.	इस्माइलपुर	12543	15354
8.	कठेवरपुर परवेजपुर	14108	15662
9.	महरौड़ा	16223	16172

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 684-692

10.	मऊआइमा	12925	16669
11.	पसियापुर	11976	14616
12.	टी.टी. अब्दालपुर	15833	19675
13.	रामपुर घनसियारी	9754	12701
कुल	**विकास खण्ड मऊआइमा**	**14944**	**185851**

स्त्रोतः सेंसस आफ इंडिया वर्ष 2001, 2011।

उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट है की सर्वाधिक आबादी 22858 (2011 जनगणना) अब्दालपुर न्याय पंचायत के अंतर्गत निवास करती है। अब्दालपुर न्याय पंचायत में गांव की संख्या अधिक है इसके अंतर्गत कुल 15 ग्राम पंचायत है। जबकि बिरसिंहपुर उर्फ अल्लीपुर में जनसंख्या मात्र 1845 (2011) ही है। इसका मुख्य कारण इस न्याय पंचायत के अंतर्गत केवल एक ग्राम पंचायत ही स्थित है। अन्य सबसे कम आबादी विसंभर पुर 1912 (2011) है। अन्य सभी न्याय पंचायतों में जनसंख्या 10,000 से अधिक निवास करती है। स्पष्ट है कि जनसंख्या वितरण काफी सघन पाया जाता है। प्रमुख कारण कृषिगत समाज, परंपरागत जीवन स्तर, निम्न शिक्षा का स्तर एवं परिवार नियोजन की कमी है। उपरोक्त पर जनसंख्या वितरण को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है–

2.2.1 न्यून जनसंख्या वितरण(10000 से कम)

न्यूनतम जनसंख्या वितरण के अंतर्गत केवल दो न्याय पंचायत एक विसंभर पुर एवं दूसरी बिरसिंहपुर उर्फ अल्लीपुर जहां क्रमशः 1912 एवं 1845 लोग रहते हैं जो कुल आबादी का 1 प्रतिशत से भी कम है।

2.2.2 मध्यम जनसंख्या वितरण(10000–15000)

मध्यम जनसंख्या वितरण के अंतर्गत प्रमुख न्याय पंचायतें जिसमें बड़गांव 14010 (2011 जनगणना), पसियापुर 14616, रामपुर घसिंयारी 12701 आबादी शामिल है। जो विकासखंड की कुल आबादी का 20 प्रतिशत भाग है।

2.2.3 उच्च जनसंख्या वितरण (15000 से अधिक)

उच्च जनसंख्या वितरण के अंतर्गत 15,000 से अधिक आबादी वाले न्याय पंचायतों को शामिल किया गया है। इसके अंतर्गत मुख्य रूप से अब्दालपुरखास 22858 (2011 जनगणना), अलावलपुर 17080, बांका जलालपुर 16987, इस्माइलपुर 15354, कठेवर परवेजपुर 18662, टिकड़ी तालुका अब्दालपुर 19675, अति सघन जनसंख्या वितरण वाले न्याय पंचायतें हैं। जहां विकास खंड मऊआइमा की कुल आबादी का 60 प्रतिशत हिस्सा निवास करता है। स्पष्ट है कि पूरे विकासखंड में जनसंख्या का सघन वितरण पाया जाता है।

2.3 जनसंख्या घनत्व

जनसंख्या घनत्व स्थानीय संसाधनों के संबंधों को स्पष्ट करने की सर्वोत्तम विधि है। जिसमें जनसंख्या वितरण को भली–भांति समझा जा सकता है। जनसंख्या घनत्व कई प्रकार से व्यक्त किए जाते हैं। प्रति इकाई क्षेत्रफल के संदर्भ में जनसंख्या को प्रकट किया जाता है। यह किसी राजनैतिक प्रशासनिक इकाई में भूमि जनसंख्या अनुपात को व्यक्त करता है। इसमें अधिक घनत्व की व्यवहारिक उपयोगिता ऐसे लघु क्षेत्रों में जिसमें वातावरण एवं मानवीय दशायें लगभग समान है जैसे–जैसे क्षेत्रीय आकार बढ़ता जाता है भौगोलिक वातावरण की विषमताएं भी बढ़ती हैं। परिणाम स्वरूप अंकिक घनत्व की सार्थकता भी कम होती है। **क्लार्क के शब्दों में** "जनसंख्या घनत्व मनुष्य के क्षेत्रीय वितरण के प्रारूप को स्पष्ट करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है"। जनसंख्या की दृष्टि से विकासखंड मऊआइमा का जनघनत्व निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है (तालिका 2.4)

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 684-692

तालिका:2.4 विकासखंड मऊआइमा में न्याय पंचायत स्तर पर जनघनत्व (वर्ष 2001,2011)

क्रम संख्या	न्याय पंचायत	क्षेत्रफल (वर्गकिमी)	जनघनत्व 2001	जनघनत्व 2011
1.	अब्दालपुर खास	15.86	879	1441
2.	अलावलपुर	11.76	1098	1452
3.	बाकां जलालपुर	15.35	957	1106
4.	बड़गांव	1376	834	1018
5.	विसम्भर पुर	1.46	1085	1309
6.	वीर सिंह उर्फ अल्लीपुर	1.17	1309	1576
7.	इस्माइलपुर	13.70	915	1120
8.	कठेवरपुर परवेजपुर	10.55	1337	1782
9.	महरौड़ा	16.67	967	964
10.	मऊआइमा	13.58	952	1227
11.	पसियापुर	8.53	1403	1713
12.	टी.टी. अब्दालपुर	15.52	1020	1266
13.	रामपुर घनसियारी	13.71	711	926
कुल	**विकासखण्ड मऊआइमा**	**151.09**	**988**	**1226**

स्त्रोतः सेंसस आफ इंडिया, वर्ष 2001, 2011

उपरोक्त आंखों से स्पष्ट है कि विकासखंड मऊआइमा में जनघनत्व अत्यधिक सघन पाया जाता है। जहां 2011 जनगणना के अनुसार जिला स्तर पर जनघनत्व 1086 है वहीं विकासखंड मऊआइमा में 1226 है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है की विकासखंड मऊआइमा में जनघनत्व बहुत ऊंचा है। जनघनत्व अत्यधिक ऊंचा होने का प्रमुख कारण उपजाऊ कृषि भूमि, अत्यधिक श्रम की आवश्यकता, परंपरागत कृषि, शिक्षा में कमी, निम्न जीवन स्तर, स्वास्थ सुविधाओं में कमी एवं परिवार नियोजन के प्रति उदासीनता है।

न्याय पंचायत के अनुसार सबसे कम जनघनत्व रामपुर घंसियारी, महरौड़ा, में है। जहां जनघनत्व 1000 से कम पाया जाता है। सबसे अधिक जनघनत्व कठेवर परवेजपुर में जनघनत्व मिलता है। जहां प्रति वर्ग किलोमीटर 1782 व्यक्ति पाए जाते हैं। उपरोक्त आंकड़ों को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है–

(क) न्यूनतम जन घनत्व वाले क्षेत्र (1000 से कम)– इसके अंतर्गत दो न्याय पंचायत महरौड़ा 964 एवं रामपुर घंसियारी 926 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर जनघनत्व पाया जाता है। यहां जनघनत्व अपेक्षाकृत कम पाए जाने का कारण अधिक भूमि उपलब्धता है।

(ख) मध्यम जनघनत्व वाले क्षेत्र (1000–1500)– इसके अंतर्गत अब्दालपुर खास 1441, अलावलपुर 1452, बांका जलालपुर 1106, बड़गांव 1018, विसंभरपुर 1309, इस्माइलपुर 1120, मऊआइमा 1227, टिकड़ी तालुका अब्दालपुर 1266 में व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर जन घनत्व पाया जाता है। इससे स्पष्ट है अधिकांश न्याय पंचायत में समान जन घनत्व पाया जाता है।

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 684-692

(ग) उच्च जनघनत्व (1500 से अधिक)– इसके अंतर्गत बिरसिंहपुर उर्फ अल्लीपुर 1576, कठेवर परवेजपुर 1782 एवं पसियापुर 1713 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर जन घनत्व पाया जाता है। यहां सर्वाधिक सघन जनघनत्व मिलता है।

2.4 साक्षरता

साक्षरता मानव विकास का सर्वोत्तम सूचक है। यह मानव जीवन को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। मानव में शिक्षा का विकास मानव को उत्कृष्ट प्राणी का दर्जा प्रदान करता है। साक्षरता का अर्थ पढ़ने और लिखने से है। साक्षरता व्यक्तियों को अक्षर ज्ञान प्रदान करती है। साक्षरता के द्वारा ही किसी देश की गुणवत्ता की पहचान होती है।

भारत में किसी व्यक्ति को साक्षर तब कहा जाता है जब वह अपना नाम पढ़ लिख सके। आजादी के समय भारत की केवल 12 प्रतिशत आबादी ही साक्षर थी किंतु आजादी के बाद शिक्षा में विस्तार किया गया जिससे से लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी। वर्तमान समय में भारत की 73 प्रतिशत आबादी साक्षर है। साक्षरता अंतरराष्ट्रीय संबंधों के निर्माण और जनसांख्यिकी प्रक्रिया कि स्वतंत्र क्रियाशीलता में बेहद महत्व रखती है। साक्षरता के विकास में मानव अपने परिवेश के बाहर आकर अपने क्षेत्र में सभी सामाजिक–आर्थिक एवं राजनैतिक प्रवृत्तियों से अन्योन्यक्रिया स्थापित करता है।

भूगोल में साक्षरता का अध्ययन जनसांख्यिकी अध्ययन के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण घटक है। **जी. टी. ट्रीवार्था (1953) के अनुसार** "अपने देश की भाषा में अपना नाम लिख लेना और पढ़ लेना साक्षरता है"। किसी भी क्षेत्र में साक्षरता एवं विकास में गुणात्मक सहसंबंध होता है।" भारतीय साक्षरता दर की प्रमुख विशेषता स्त्री–पुरुष, ग्राम–नगर, गांव–शहर में अलग अलग होती है।

विकासखंड मऊआइमा प्रयागराज इलाहाबाद के अंतर्गत साक्षरता दर का स्तर विभिन्न न्यायपंचायतों में निम्नलिखित तालिका के माध्यम से समझा जा सकता है–

तालिकाः 2.5 विकासखंड मऊआइमा में न्याय पंचायत स्तर पर शैक्षिक स्थिति (2011)

क्रम संख्य	न्याय पंचायत	जनसंख्या	साक्षरता दर प्रतिशत में
1.	अब्दालपुर खास	22858	70.21
2.	अलावलपुर	17080	65.42
3.	बाकां जलालपुर	16987	64.82
4.	बड़गांव	14010	67.20
5.	विसम्भर पुर	1912	65.02
6.	वीर सिंह उर्फ अल्लीपुर	1845	64.02
7.	इस्माइलपुर	15354	68.04
8.	कठेवरपुर परवेजपुर	18662	67.21
9.	महरौड़ा	16172	63.06
10.	मऊआइमा	16669	69.42
11.	पसियापुर	14616	61.89

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 684-692

12.	टी.टी. अब्दालपुर	19675	66.42
13.	रामपुर घनसियारी	12701	61.23
कुल	**विकास खण्ड मऊआइमा**	**185851**	**67.03**

स्त्रोतः सेंसस ऑफ इंडिया, डिस्ट्रिक्ट डायरेक्टरी बुक, 2011।

तालिका 2.6 साक्षरता दर महिला पुरुष अनुपात

क्रम संख्या	मऊआइमा	व्यक्ति	पुरुष	महिला
1.	साक्षर जनसंख्या	105173	6395	41218
2.	निरक्षर जनसंख्या	80678	31829	48849
3.	साक्षरता दर	67.03	79.27	54.08

स्त्रोतः सेंसस ऑफ इंडिया, डिस्ट्रिक्ट डायरेक्टरी बुक, 2011।

उपरोक्त दोनों तालिका से स्पष्ट है कि विकासखंड में शिक्षा के लिए आधारभूत एवं उपयोगी कदम उठाने की आवश्यकता है। जहां केवल 67.03ः अबादी साक्षर है जिसमें महिला साक्षरता दर 54ः है। विकासखंड क्षेत्र शहर से दूर होने के कारण एवं उच्च शिक्षण संस्थान की कमी होने के कारण बेहतर शिक्षा उपलब्ध नहीं हो पाती है। फिर भी निजी शिक्षण संस्थाओं के द्वारा शिक्षा में सुधार हुआ है। महिला साक्षरता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

2.4.1 अनुसूचित जाति में साक्षरता दर

शिक्षा का स्तर सबसे निचले स्तर पर रहने वाले अनुसूचित समुदाय के लोगों के लिए अत्यधिक जरूरी है अनुसूचित जाति मे शिक्षा का स्तर आज भी काफी कम है जिसके लिए उसका मूल्यांकन एवं मापन आवश्यक है। अनुसूचित जाति में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षक के मध्य अत्यधिक अंतर देखने को मिलता है। जहां प्राथमिक शिक्षा में अनुसूचित समुदाय में नामांकन बेहतर देखने को मिलता है वही माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा तक इसमें काफी कमी आ जाती है। विकासखंड मऊआइमा में अनुसूचित जाति में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की शैक्षिक अस्तर बेहद कमजोर है। जिस कारण अनुसूचित जाति में विभिन्न प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक समस्याएं विद्यमान है। जिसे निम्नलिखित तालिका के माध्यम से समझा जा सकता है–

तालिका 2.7 विकासखंड मऊआइमा में अनुसूचित जाति में साक्षरता दर

क्रम संख्या	मऊआइमा	व्यक्ति	पुरुष	महिला
1.	साक्षर	21258	13088	8170
2.	निरक्षर	23593	9905	13688
3.	साक्षरता दर	57.06	69.09	44.62

स्त्रोतः सेंसेस ऑफ इंडिया, 2011 डिस्ट्रिक्ट डायरेक्टरी बुक

2.5 व्यावसायिक संरचना

किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या एवं उसके जीवन–यापन के साधन उस क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों को निर्धारित करते हैं। जनसंख्या के व्यवसाय संरचना का अध्ययन सामाजिक आर्थिक महत्व एवं आर्थिक

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 684-692

गतिविधियों को स्पष्ट करता है। व्यवसायिक संरचना स्थानीय संसाधनों द्वारा निर्धारित होती है। उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से प्राथमिक एवं द्वितीयक क्रियाओं का निर्धारण एवं आकलन किया जा सकता है। व्यवसायिक संरचना किसी क्षेत्र विशेष की जनसंख्या के संरचनात्मक आर्थिक संगठन का परिणाम है। किसी भी समाज में व्यवसायिक संरचना पर अनेक तत्वों का प्रभाव पड़ता है। व्यवसायिक संरचना के द्वारा श्रम के स्वरूप को निर्धारित किया जा सकता है।

1.किसी भी क्षेत्र में उद्योग, व्यापार तथा कृषि में संलग्न श्रम शक्ति का निर्धारण।
2.प्रादेशिक या क्षेत्रीय आर्थिक विकास की स्थिति।
3.आर्थिक संरचना का मूल्यांकन एवं भावी संभावनाओं का निर्धारण।
4.आर्थिक निर्भरता एवं सामाजिक संगठन के क्रमिक परिवर्तन का मूल्यांकन।

किसी भी प्रदेश में भौतिक संसाधन सबसे पहले वहां के व्यवसायिक संरचना को प्रभावित करते हैं। भौतिक संसाधनों की विविधता ही कृषि, वन, खनिज संसाधन आदि व्यवसायिक संरचना का निर्धारण करते हैं। औद्योगिकीकरण स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग एवं आर्थिक सुदृढ़ीकरण को मजबूत बनाता है। साथ ही स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी एक नया स्वरूप प्रदान करता है। जिससे स्थानीय रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं।

अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला क्षेत्र है। जहां कृषि से संबंधित उद्योगों का विकास की अपार संभावनाएं हैं। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र की व्यवसायिक संरचना को सामान्य रूप से तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

1. **प्राथमिक व्यवसाय**–इसके अंतर्गत कृषि, पशुपालन, वनोत्पादन, जैसी प्राथमिक क्रियाएं शामिल होती हैं।
2. **द्वितीय व्यवसाय**–इसके अंतर्गत कुटीर एवं लघु उद्योग, विनिर्माण उद्योग एवं उसमें संलग्न श्रमिकों को शामिल किया जाता है।
3. **तृतीयक व्यवसाय**–इसके अंतर्गत वाणिज्य, परिवहन, संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार जैसी सेवाओं को शामिल किया जाता है।

चूंकि अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला भूभाग है अतः प्राथमिक क्रियाओं में संलग्न जनसंख्या अधिक है। तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या के कारण कृषि पर निर्भरता और दबाव दोनों बढ़ा है। कृषि के साथ–साथ अन्य आर्थिक लाभ के साधनों का विकल्प बनाने होंगे ।

तालिकाः 2.8 विकासखंड मऊआइमा में व्यवसायिक संरचना वर्ष 2011

क्रम संख्या	व्यवसाय	जनसंख्या	प्रतिशत
1.	कुल कृषक	24670	33.81
2.	कृषक श्रमिक	24757	33.43
3.	घरेलू उद्योगों में संलग्न श्रमिक	5450	07.47
4.	अन्य श्रमिक	18079	24.78
कुल	**कार्यशील जनसंख्या**	**72956**	**100**

स्त्रोत : सेंसस ऑफ इंडिया, डिस्ट्रिक्ट डायरेक्टरी बुक 2011

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 684-692

उपरोक्त कैसे स्पष्ट है की कुल कार्यशील व्यक्तियों की संख्या में केवल 33. 81 प्रतिशत लोग कृषि कार्य करते हैं जिसमें 33. 43 प्रतिशत लोग कृषक श्रमिक है। घरेलू उद्योग में सलंग्न मात्र 7.47 प्रतिशत लोग हैं। जबकि 24.78 प्रतिशत लोग अन्य कार्यों में लगे हुए हैं।

कुल जनसंख्या में कार्यशील आबादी केवल 72956 है। जिस पर शेष आबादी जीवन यापन के लिए निर्भर है। इससे स्पष्ट है रोजगार के अवसर सीमित हैं। जिसके लिए बेहतर योजना एवं रणनीति की आवश्यकता है। प्राथमिक रोजगार के अतिरिक्त अन्य रोजगार के साधन तलाशने होंगे। कृषि की अतिरिक्त अन्य छोटे मझोले उद्योगों को प्रोत्साहित करना होगा साथ ही उद्योगों के लिए वित्तीय पूंजी की व्यवस्थाकरनी पड़ेगी जिससे लोगों को रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हो सकें।

निष्कर्षः उपरोक्त जनसांख्यिकीय विवरण से स्पष्ट है कि विकासखंड मऊआइमा में जनसंख्या का दबाव बहुत अधिक है। जनसंख्या वृद्धि वितरण तथा घनत्व राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर से अधिक है। अतः इसके लिए बेहतर रणनीति तथा परिवार नियोजन के प्रति लोगों में जागरूकता के प्रचार प्रसार की अत्यंत आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. देशपांडे, सी.डी. (1992): 'ए रीजनल इंटरप्रिटेशन', आई.सी.एस.एस.आर., नई दिल्ली, पृष्ठ 81 ।
2. सेंसेस ऑफ इंडिया, (2011), 'डिस्ट्रिक्ट हैंडबुक' इलाहाबाद ।
3. सिंह, के. एन. एवं सिंह, जगदीश, (2011), 'आर्थिक भूगोल के मूल तत्व' ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर ।
4. तिवारी, आर.सी., (2012), 'भारत का भूगोल', प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।
5. तिवारी, आर.सी. एवं सिंह, बी.एन., (2001), 'कृषि भूगोल', प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।
6. क्लार्क, जे. आई., (1972), 'पापुलेशन ज्योग्राफी', पैरागॅमान पब्लिकेशन, ऑक्सफोर्ड ।
7. चांदना, आर.सी., (2013), 'जनसंख्या भूगोल', कल्याणी पब्लिकेशन, लुधियाना ।
8. डेमोरी, एन.के., (1963), 'पापुलेशन जियोग्राफी'।
9. सर्वे ऑफ इंडिया, (1972), एस.ओ.आई., टोपोशीट 63.14 ।